Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

भवभूते हृदयम् उत्तररामचरितम्

Dr. Nisha Rani*

PGT Sanskrit, GGSSS, Sisana, Sonipat

भूमिका - उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विविष्यते वाली लोकोक्ति "उत्तररामचरितम्" के संबंध में बिल्कुल सत्य प्रतीत होती है। साहित्य के आलोचकों का अनुमान है कि इस रचना में भवभूति कालिदास से आगे बढ़ गए हैं। इस नाटक में उन्होने करूण रस का स्रोत बहाया है। विद्वानों का यह भी कहना है कि करूण रस के वर्णन में भवभूति संस्कृत के सब कवियों से आगे बढ़े हुए हैं। इसी नाटक में भवभूति ने स्वयं के लिए कहा है कि उनके संकेत पर सरस्वती उनकी जिह्वा पर नाचने लगी थी। करूण रस के अलावा श्रृंगार और वीर रस के वर्णन में भी कवि ने लोकोत्तर कुशलता प्राप्त की। वीर रस की दृष्टि से युद्ध-वर्णनमाला प्रसंग अद्वितीय हैं।

भवभूति को युगों से प्रशस्तियों में स्मरण किया गया है। राजशेखर ने इन्हे वाल्मिकी का अवतार कहा है, रामकथा-विषयक नाटक की रचना स्वयं भी करने से उन्होने अपने आपको भवभूति का दूसरा रूप कहने में गर्व का अनुभव किया है।

वभूव वाल्मिकीभवः पूरा कविसततः प्रपेदे

भूविभरत्तृमेण्ठ स्थितः

पुनर्योः भवमूतिरेखया,

स वर्तते सम्प्रतिः राजशेखर।।

सुभाषित ग्रथों में भवभुति के द्वारा उद्भावित करूण रस की बहुत प्रशंसा हुई है। यह भी कहा गया है कि अन्य कवियों में भी विशेषताएं मिलें किन्तु अनिर्वचनीय आनन्द भवभूति ही देते हैं-तथाप्यन्तर्मोदं कमपि भवभूतिर्वितनुते।

महाकवि क्षेमेन्द्र ने 'सर्वं तिलके नामक छन्दोविषयक ग्रंथ में भवभूति- प्रयुक्त शिखरिणी -छंद की प्रशंसा की है कि शिखरिणी अबाध गति से बहने वाली नदी के समान है तथा धन-संदर्भ में (मघों के मिलने पर, गहन शब्दों के प्रयोग में) मयूरी के समान चकित होकर नृत्य करती है-

भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरगिंणी।1

चकिता धनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति।।

----------X----------

भवभूति का परिचय-

भवभूति का जन्म दक्षिण में विदर्भ देश के अंतर्गत पद्मपुर नामक ग्राम में हुआ थां इनके दादा कानाम भट्टागोपाल पिता का नाम नीलकण्ठ तथा माता का नाम जातुकर्णी और स्वयं इनका उपनाम 'श्रीकण्ठ' था। इनके पूर्वज कश्यप् गोत्रीय यजुर्वेद की तैतिरिय शाखा के पंडित थे। इस नाटक का कथानक भवभूति ने रामायण' से लिया है।

भवभूति कब और किस समय हुए यह जानना बहुत ही कठिन है, परन्तु अनुमान से पंडित लोगों ने इनका समय सातवीं-

www.ignited.in

आठवीं शताब्दी के आस-पास माना है। इन्ही के प्रसिद्ध नाटक 'उत्तररामचरितम्' का कथानक यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

उत्तमरामचरितम्

यह भवभूति के रूपकों में श्रेष्ठ है, कवित्व तथा नाट्यकौशल दोनों का प्रकर्ष इसमें प्रकट होता है। भवभूति के गंभीर स्वभाव का उत्कर्ष इसमें मिलता है। पूरे नाटक में राम का चरित्र शील, सत्य और शक्ति का उत्स बनकर प्रकाशित हुआ है। रामायण के उत्तरकाण्ड के सीता-निर्वासन के कथानक पर यह आश्रित है। राम लोकाराधन के लिए स्नेह, दया और सुख की मूर्ति अपनी प्रियतमा का त्याग कर देते हैं। किन्तु फिर भी भीतर ही भीतर असह्य वेदना से दग्ध होते रहते हैं। उनके समस्त व्यापार केवल कर व्यय निर्वाह के लिए होते हैं। राम का जीवन एकमात्र करूण रस के फलक पर विभिन्न रसों के चित्र अंकित करता है- "एको रसः करूण व निमिभेदाद् भिन्नः -पुथक पृथगिवाश्रयते विवर्तान्"।2 सीता निर्वासन की परिस्थिति में राम का उत्तरदायित्व समुचित परिप्रेक्ष्य में दिखाकर कवि ने उनके चरित्र को कलंकमुक्त तो किया ही है, उन्हे एकांत निर्जन वन में अपनी भावना के प्रकाशन का भी अवसर दिया है। करूण रस प्रधान नाटक में भी आशावाद की सुखद किरणों की झलक यत्र-तत्र देते हुए कवि ने रामायण की दुखान्त कथा के प्रतिकुल नाटक को सुखान्त बनाया है। यह सात अंकों का नाटक है। प्रथम अंक में घटनाओं के संयोजन में कवि ने उत्कृष्ट कला की अभिव्यक्ति की है। राज्यभिषेक के बाद राम राजा के रूप में अपने कर व्यपालन में अत्यधिक निरत है। उनके सभी गुरूजन (वशिष्ठ तथा माताएं) ऋष्यशृंग के द्वादश वार्षिक सत्र में चले गए हैं, वशिष्ठ का संदेश जब राजकरव्यय के पालन के संबंध में राम को मिलता है तो वे कह उठते हैं-

स्नेह दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।

आराधनाथ लोकस्य मुंञ्चतो नास्ति में व्यथा।।3

सीता इस समय पूर्णगर्भा है, उसके साथ राम-चित्रवीथी के दर्शनार्थ जाते हैं। इस चित्रवीर्थी में राम के जीवन से संबंधित चित्रों को प्रदर्शित किया गया है-विश्वामित्र के आश्रम-प्रसंग से आरम्भ करके सीता की अग्निपरिक्षा तक के अनेक चित्र इसमें हैं। प्रत्येक चित्र को देखकर राम की प्रतिक्रिया होती है। वे सीताहरण के बाद के चित्रों को नहीं देख पाते। उन्हे लगता है कि पुनः सीता वियोग वस्तु आ गया हो। आगे चलकर यही होता है। सीता थककर उसकी गोद में सो जाती है, राम उसके प्रति अपने आकर्षण का प्रकाशन कई सुन्दर पद्यों में करते हैं। एक पद्य का अन्त है-

किमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरहः।4

इसी बीच प्रतिहारी आकर कहती है कि-देव, उपस्थितः। राम को "विरहः उपस्थितः" की प्रतीति से घबराहट हो जाती है। इस प्रकार प्रथमांक में बार-बार सीता-विरह का प्रच्छन्न संकेत मिलता है। अन्ततः गुप्तचर दुर्मुख उपस्थित होकर राम को नगर और ग्रामों में फैले सीता अपवाद का समाचार देता है। राम सीता के निर्वासन का कठोर निर्णय लेते हैं, उन्हे रोकने वाला कोई गुरूजन भी उस समय नहीं है। वे भारी मन से लक्ष्मण को आदेश देते हैं।

द्वितीयाङ्क से जो घटनाएं उपस्थापित हैं वे प्रथम अंक के सीतानिर्वासन के 12 वर्षों के बाद की हैं। सीता के दो पुत्रों (लव-कुश) को वाल्मीकि के आश्रम में शिक्षा मिलती है। इसी बीच राम ने अश्वमेघ-यज्ञ आरम्भ किया है, सीता की स्वर्णिम प्रतिमा बनाकर सहधर्मिणी के रूप में रखी। राम शम्बूक नामक शूद्रमुनि के वध के लिए दण्डकारण्य जाते हैं, उसे मारने पर दिव्य-पुरूष का स्वरूप मिलता है। दोनों दण्डकारण्य की भयावह प्रकृति का काव्यात्मक वर्णन करते हैं।

तृतीयांङ्क-इस नाटक का सर्वश्रेष्ठ अंक स्थल है। इसमें राम पंचवटी में पुनः आकर चिरपरिचित दृश्यों को देखते हैं। सीता भी गंगा के प्रसाद से अदृश्य रूपा बनकर राम के विभिन्न मनाभावों और कारूणिक व्यापारों का सद्यः अनुभव करती है। उसे संतोष होता है तथा राम के प्रति मन में बना कलुष निकल जाता है। राम दो बार मुच्छित भी हो जाते हैं, सीता का स्पर्श उन्हे पुनर्जीवन देता है। छाया-रूपा सीता की उपस्थिति के कारण इस अंक को 'छायांक' कहते हैं। राम और सीता के मनोभावों की यहां सूक्ष्म अभिव्यक्ति हुई है।

चतुर्थाङ्क-वाल्मिकी आश्रम का दृश्य है जहां वशिष्ठ, अरून्धती, कौसल्या, जनक आदि का आगमन होता है। लव को कौसल्या विस्मयपूर्वक देखती है, वह वाल्मीकी कृत रामायण-कथा का परिचय देते हैं। तुरंत वह राम के अश्वमेघ यज्ञ में छोड़े गए अश्व को पकड़ने के लिए प्रस्थान करता है।

पंचमाङ्क-लब और चंद्रकेतु (लक्ष्मण का पुत्र) का युद्ध होता है। इसमें वीर रस के संवाद हृदयग्रजक हैं।

षष्ठाङ्क-विषकम्भक में दोनो वीरों ने युद्धों का रोमांच वर्णन है। राम का आगमन होता है। जिससे दोनों युद्ध बंद कर देते हैं, कुश भी इस बीच आता है। राम का अनुमान है कि ये दोनों (लव-कुश) सीता के ही पुत्र हैं। किन्तु वे दोनों राम के प्रश्नों का उत्तर उदासीन होकर देते हैं।

www.ignited.in

सप्तमाङ्क-सुखान्त बनाने के लिए कवि ने वाल्मीकि रचित रामविषयक नाटक के अभिनय की कथा कल्पित की है। गंगातीर पर इस नाटक का अभिनय अप्सराओं द्वारा होता है, राम और उनकी समस्त प्रजा आमन्त्रित है। इस गर्भनाटक में सीतानिर्वासन से लेकर लव-कुश के जन्म तक की कथा का अभिनय होता है, इन शिशुओं को स्तनत्याग के बाद गंगा वाल्मीकि के आश्रय में देने का वचन देती है और पृथ्वी सीता से तब के लिए उनके पालन का अनुरोध करती है। गर्भनाटक के बाद राम मूच्छित हो जाते हैं। सीता पुनः आकर राम की मूर्छा दूर करती है, राम का सीता व लव-कुश से समागम हो जाता है। गर्भनाटक के द्वारा सीता के चरित्र को सब की दृष्टि में उठाया गया है और नायक का कल्याण दिखाकर नाटक को सुखान्त बनाया गया है।

उपसंहार

नाटककार के रूप में भवभूति के व्यक्तित्व का परिचय 'महावीरचरितम्', 'मालतीमाधवम्' और 'उत्तररामचरितम्' इन तीन कृतियों द्वारा मिलता है। ये तीनों नाटक उज्जैन के कालप्रियनाथ के महोत्सव पर अभिनीत हुए थें इनमें 'उत्तररामचरितम्' उनकी सर्वोकृष्ट एवं संस्कृत के शीर्षस्थानीय नाटकों की कोटि में गिनी जाने वाली रचना है। रामकथा के जिस नाजुक पक्ष को लेकर भवभूति ने अपनी इस कृति को सफलतापूर्वक सम्पादित किया है, वैसा इस परम्परा लिखे गए दूसरे ग्रंथों में आज तक नहीं मिलता है। दूसरे रामकथा विषयक भारती नाटककारों की अपेक्षा भवभूति ने अपने इस नाटक में राम और सीता के पवित्र एवं कोमल प्रेम व अधिक वास्तविकता से चित्रण किया है।

संदर्भ सूचि

बालरामायण-1(16)

सुवृत्त तिलक-3/33

उत्तररामचरितम्-3/47

उत्तररामचरितम्-1/12

उत्तररामचरितम्-1/38

ए. ए. मैक्डोनेल: हिस्ट्री ऑफ़ संस्कृत लिटरेचर, पृष्ठ संख्या - 365

Corresponding Author

Dr. Nisha Rani*

PGT Sanskrit, GGSSS, Sisana, Sonipat

E-Mail – nishashashi00@gmail.com